

डैनियल की पुस्तक - संख्या सात

सात राजा

Jeff Pippenger

2023-12-02

सात गर्जन 1798 से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक के इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह इतिहास यहूदा के राज्य के अंतिम सात राजाओं द्वारा, मनश्शे (677 ईसा पूर्व) से लेकर सिदकिय्याह (586 ईसा पूर्व) तक, निरूपित किया गया था।

पवित्र सुधार की रेखाओं में, पहले स्वर्गदूत के सशक्तीकरण की एक विशेषता एक ऐसा प्रतीक है जो किसी विश्वव्यापी बात की पहचान कराता है। 11 अगस्त, 1840 को पहले स्वर्गदूत के संदेश का सशक्तीकरण हुआ और फिर वह संदेश संसार के हर मिशन केंद्र तक पहुँचाया गया।

1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की शक्ति का एक महिमामय प्रगटीकरण था; पहले स्वर्गदूत का संदेश संसार के हर मिशन केंद्र तक पहुँचाया गया था। महान विवाद, 611.

उस समय भविष्यसूचक रूप से, प्रकाशितवाक्य अध्याय दस का स्वर्गदूत उतरा और एक पैर पृथ्वी पर तथा दूसरा समुद्र पर रखा। सिस्टर व्हाइट ने इसे संदेश के विश्वव्यापी विस्तार के प्रतीक के रूप में पहचाना।

स्वर्गदूत की स्थिति, जिसमें उसका एक पाँव समुद्र पर और दूसरा भूमि पर है, संदेश के प्रचार की व्यापकता का संकेत देती है। वह विस्तृत जलराशियों को पार करेगा और अन्य देशों में, यहाँ तक कि समस्त संसार में भी, प्रचारित किया जाएगा। दि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 971.

सायरस द्वारा जारी किया गया पहला फ़रमान एक विश्वव्यापी फ़रमान था।

अब पारस के राजा कुरूश के प्रथम वर्ष में, ताकि यिर्मयाह के मुख से कही गई प्रभु की वाणी पूरी हो, प्रभु ने पारस के राजा कुरूश की आत्मा को जागृत किया; और उसने अपने सारे राज्य में घोषणा करा दी और यह लिखकर भी भेजा: 'पारस का राजा कुरूश यूँ कहता है: स्वर्ग के परमेश्वर प्रभु ने मुझे पृथ्वी के सब राज्य दिए हैं, और उसने मुझ पर यह भार रखा है कि मैं यहूदा के यरूशलेम में उसके लिए एक घर बनाऊँ। उसकी प्रजा में से तुम में जो कोई हो—उसका परमेश्वर उसके साथ हो—वह यहूदा के यरूशलेम को जाए और यरूशलेम में जो इस्राएल के परमेश्वर, प्रभु, का घर है (वही परमेश्वर है), उसका निर्माण करे। और जो कोई जहाँ कहीं परदेश में रहता हो, वहाँ उस स्थान के लोग उसे चाँदी, सोना, सामान और पशुओं से सहायता दें, और यरूशलेम में जो परमेश्वर का घर है उसके लिए स्वेच्छा-भेंट भी दें।' तब यहूदा और बिन्यामीन के पितरों के घरानों के प्रधान, और याजक, और लेवी, और वे सब जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा था, उठ खड़े हुए कि यरूशलेम में जो प्रभु का घर है उसे बनाने को ऊपर जाएँ। एज्रा 1:1-4.

जैसे 11 अगस्त, 1840 को पहला स्वर्गदूत दुनिया के हर मिशन स्टेशन तक पहुँचाया गया था, वैसे ही जब वह पहला फरमान घोषित करता है, तो कुरूश अपने आप को "पृथ्वी के सब राज्यों का राजा" घोषित करता है। प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के स्वर्गदूत का अवरोहण, जिस स्वर्गदूत को सिस्टर व्हाइट "स्वयं यीशु मसीह से कम कोई नहीं" के रूप में पहचानती हैं, प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के शक्तिशाली स्वर्गदूत के समान ही भविष्यसूचक विशेषताएँ रखता है। सिस्टर व्हाइट बताती हैं कि पहले स्वर्गदूत का उद्देश्य वही था जो प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत का था।

"यीशु ने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को यह आज्ञा दी कि वह पृथ्वी पर उतरकर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दे कि वे उसके दूसरे आगमन की तैयारी करें। जैसे ही स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से निकला, एक अत्यंत

तेजस्वी और महिमामय प्रकाश उसके आगे-आगे चला। मुझे बताया गया कि उसका मिशन अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करना और मनुष्यों को परमेश्वर के आने वाले क्रोध की चेतावनी देना था।" प्रारंभिक लेखन, 245.

पहले स्वर्गदूत का सशक्तिकरण एक ऐसा प्रतीक है जो विश्वव्यापी तत्व पर बल देता है। मसीह के समय का पहला संदेश मसीह के बपतिस्मा के समय सशक्त किया गया था। शास्त्र बताते हैं कि सारा इस्राएल यूहन्ना का संदेश सुनने जंगल में निकल गया।

तब यरूशलेम से, और सारे यहूदिया से, और यर्दन के आसपास के पूरे क्षेत्र से लोग उसके पास निकलकर आए; और वे अपने पापों को स्वीकार करते हुए यर्दन में उससे बपतिस्मा लेते थे। मत्ती 3:5, 6.

मसीह की सेवकाई प्राचीन इस्राएल की ओर निर्देशित थी, और उस भविष्यसूचक अर्थ में समूचा संसार यरदन—मसीह के बपतिस्मा के स्थान—की ओर खिंचा चला आया। फिर भी बपतिस्मा का संस्कार, और जब मसीह ने बपतिस्मा लिया तब उसका जो अर्थ था, सम्पूर्ण संसार के लिए था।

यहोयाकीम नाम का अर्थ है "परमेश्वर उठेगा", और मसीह के बपतिस्मा में, जब यूहन्ना ने मसीह को पानी से ऊपर उठाया, तब जलमय कब्र से "उठकर बाहर आने" का प्रतीक उस सामर्थ्य-प्रदान का एक अंग बन गया। एज्रा की जिन पहली चार पदों का हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, उनके बाद पाँचवाँ पद उन लोगों की प्रतिक्रिया को, जिन्होंने वह आज्ञा सुनी, इन शब्दों में बताता है, "तब यहूदा और बिन्यामीन के पितरों के प्रधान, और याजक, और लेवी, और वे सब जिनकी आत्मा को परमेश्वर ने जागृत किया था, यरूशलेम में जो यहोवा का भवन है, उसे बनाने को ऊपर जाने के लिये उठ खड़े हुए।" जब पहला संदेश सशक्त होता है, तब एक उठ खड़ा होना होता है, जैसा कि यहोयाकीम नाम द्वारा निरूपित है।

11 सितंबर, 2001 को, तीसरे स्वर्गदूत के शक्तिशाली आंदोलन का पहला संदेश, पहले स्वर्गदूत के शक्तिशाली आंदोलन के पहले संदेश के सशक्तिकरण के प्रतिरूप के रूप में, सशक्त किया गया। सिस्टर व्हाइट उस तिथि को ट्विन टावर्स के विनाश पर टिप्पणी करती हैं।

"क्या अब यह बात कही जा रही है कि मैंने यह घोषित किया है कि न्यूयॉर्क को एक ज्वारीय लहर बहा ले जाएगी? यह मैंने कभी नहीं कहा। हाँ, यह मैंने अवश्य कहा है कि जब मैं वहाँ एक के ऊपर एक, मंजिल पर मंजिल, उठती हुई विशाल इमारतों को देखती थी, तो मैंने कहा, 'जब प्रभु पृथ्वी को भयानक रीति से हिला देने के लिए उठ खड़े होंगे, तब कितने भयानक दृश्य घटित होंगे! तब प्रकाशितवाक्य 18:1-3 के वचन पूरे होंगे।' प्रकाशितवाक्य का समूचा अठारहवाँ अध्याय पृथ्वी पर आने वाली बातों के विषय में एक चेतावनी है। परन्तु न्यूयॉर्क पर क्या आने वाला है, इस विषय में मेरे पास कोई विशेष प्रकाश नहीं है; केवल इतना मैं जानती हूँ कि एक दिन वहाँ की विशाल इमारतें परमेश्वर की सामर्थ्य के उलट-पलट से ढा दी जाएँगी। मुझे जो प्रकाश दिया गया है, उसके अनुसार मैं जानती हूँ कि विनाश संसार में है। प्रभु का एक ही वचन, उनकी महान सामर्थ्य का एक ही स्पर्श, और ये विशालकाय संरचनाएँ गिर पड़ेंगी। ऐसे दृश्य घटित होंगे, जिनकी भयावहता की हम कल्पना भी नहीं कर सकते।" रिव्यू एंड हेराल्ड, 5 जुलाई, 1906.

एक लाख चवालीस हजार के इतिहास में पहले संदेश के सशक्तिकरण के समय, प्रभु "उठ खड़े हुए" ताकि "पृथ्वी को भयानक रूप से हिला दें"। यहोयाकिम का नाम पहले संदेश के सशक्तिकरण का प्रतीक है। 11 अगस्त, 1840 को प्रभु अपने सिंहासन से उठे और पृथ्वी पर उतरे तथा भूमि और समुद्र पर खड़े हुए। सायरस के पहले फ़रमान पर, विश्वासयोग्य उठ खड़े हुए। यहोयाकिम केवल पहले स्वर्गदूत के आगमन का प्रतीक नहीं है, वह पहले स्वर्गदूत के सशक्तिकरण का भी प्रतिनिधित्व करता है।

यहोयाकिम अंतिम तीन राजाओं में पहला है, लेकिन वह सात राजाओं में पाँचवाँ भी है जो यरूशलेम के विनाश की ओर ले जाते हैं। उन सात राजाओं के नाम बहुत सूचनाप्रद हैं। वे सात राजा थे: मनश्शे, आमोन, योशियाह,

यहोआहाज़, यहोयाकीम, यहोयाकीन और सिदकिय्याह।

मिलराइटों के इतिहास में, मनश्शे सन् 1798 में अन्त के समय का प्रतिनिधित्व करता है। मनश्शे का अर्थ "भुला देने वाला" है, और सन् 1798 में ही टायर की वेश्या सत्तर वर्षों के लिए भुला दी जाती है। मनश्शे सबसे दुष्ट राजाओं में से एक था, और उसमें ऐसी भविष्यसूचक विशेषताएँ हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए।

यहूदा के अंतिम सात राजा 1798 से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक की सात गर्जनाओं के इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनश्शे उन सात राजाओं में पहला था, और सात में प्रथम राजा होने के कारण वह सात राजाओं के अंतिम राजा सिदकिय्याह का प्रतिरूप था। यीशु सदा अंत को आरंभ के साथ पहचानते हैं। सात में अंतिम राजा सिदकिय्याह को बाबुल की बंधुआई में ले जाया गया। अंतिम सात राजाओं में पहला राजा भी बाबुल की बंधुआई में ले जाया गया, जो अंतिम राजा को बाबुल की बंधुआई में ले जाए जाने का प्रतिरूप था।

और यहोवा ने मनश्शे और उसके लोगों से कहा, परन्तु उन्होंने नहीं सुना। इसलिए यहोवा ने उन पर अशशूर के राजा की सेना के सेनापतियों को चढ़ा भेजा; उन्होंने मनश्शे को काँटों के बीच पकड़ लिया, और उसे बेड़ियों में बाँधकर बाबुल ले गए। और जब वह क्लेश में था, तब उसने अपने परमेश्वर यहोवा से विनती की, और अपने पितरों के परमेश्वर के सामने बहुत दीन हुआ, और उसने उससे प्रार्थना की; और उसने उसकी विनती स्वीकार की, और उसकी प्रार्थना सुनी, और उसे फिर यरूशलेम में उसके राज्य पर लौटा लाया। तब मनश्शे जान गया कि यहोवा ही परमेश्वर है। 2 इतिहास 33:10-13.

मनश्शे का यह अनुभव कि प्रभु ही परमेश्वर हैं, उसके राज्य से हटाए जाने और फिर उसके राज्य में पुनः स्थापित किए जाने से सम्पन्न हुआ। नबूकदनेस्सर ने भी, मनश्शे की ही तरह, जब उसे उसके राज्य से हटाया गया और बाद में पुनः स्थापित किया गया, तब प्रभु को जाना।

और उन दिनों के अंत में, मैं, नबूकदनेस्सर, ने स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाई, और मेरी समझ मुझे लौट आई; और मैंने परमप्रधान को आशीष दी, और उस की स्तुति और आदर किया जो सदा जीवित रहता है—जिसका प्रभुत्व सदा का प्रभुत्व है, और जिसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहता है। और पृथ्वी के सब निवासी कुछ भी नहीं माने जाते; और वह स्वर्ग की सेना में और पृथ्वी के निवासियों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार करता है; और कोई उसके हाथ को रोक नहीं सकता, न उस से कह सकता है, "तू क्या कर रहा है?" उसी समय मेरी बुद्धि मुझे लौट आई; और मेरे राज्य की महिमा के साथ मेरी प्रतिष्ठा और शोभा मुझे फिर मिल गई; और मेरे सलाहकारों और मेरे सरदारों ने मेरी खोज की; और मैं अपने राज्य में स्थिर किया गया, और मेरे ऊपर उत्तम महिमा बढ़ा दी गई। अब मैं, नबूकदनेस्सर, स्वर्ग के राजा की स्तुति, बड़ाई और आदर करता हूँ—जिसके सब काम सत्य हैं, और जिसके मार्ग न्याय हैं; और जो घमण्ड में चलते हैं, उन्हें वह दीन करने में समर्थ है। दानिय्येल 4:34-37.

मनश्शे का अनुभव नबूकदनेस्सर पर घटित हुआ। मनश्शे यहूदा के अंतिम तीन राजाओं के इतिहास में "अन्त के समय" और सत्तर वर्षों की बंधुआई की भविष्यवाणी के आगमन का प्रतिनिधित्व करता है। नबूकदनेस्सर तीन फरमानों के इतिहास में "अन्त के समय" का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे 1798 सात गर्जनों के इतिहास में "अन्त के समय" था। अभी उद्धृत किए गए पदों में नबूकदनेस्सर की समझ उसे "दिनों के अन्त" पर लौट आई। "दिनों का अन्त" का उल्लेख दानिय्येल अध्याय बारह में भी है।

परन्तु तू अपने मार्ग पर अन्त तक चलता जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा, और दिनों के अन्त में अपने ठहराए हुए हिस्से में खड़ा होगा। दानिय्येल 12:13.

दानिय्येल के बारहवें अध्याय में "दिनों के अंत" का अर्थ "अंत का समय" है, क्योंकि दानिय्येल से कहा गया था कि वह "अंत होने तक" जाए। उस समय दानिय्येल "अपने भाग में खड़ा होगा।" "अपने भाग में खड़ा होना" का अर्थ अपने उद्देश्य को पूरा करना है, जो दानिय्येल ने तब किया जब दिनों के अंत में उसकी पुस्तक की मुहरें खोली गईं, जो

"अंत का समय" है। उस समय "ज्ञान में वृद्धि" होगी, जिसे बुद्धिमान समझेंगे। नबूकदनेस्सर के दिनों के अंत में उसकी "समझ" उसे लौट आई।

"जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को कोई विशेष कार्य करने को देता है, तो उसे दानिय्येल की तरह अपने ठहराए हुए भाग और स्थान पर दृढ़ खड़ा रहना चाहिए, परमेश्वर के आह्वान का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए, और उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।" Manuscript Releases, खंड 6, 108.

यहूदा के अंतिम तीन राजाओं के इतिहास में "अंत का समय" का प्रतिनिधित्व मनश्शे करता है, और तीनों फरमानों में "अंत का समय" का प्रतिनिधित्व नबूकदनेस्सर करता है। मनश्शे के बाद उसके पुत्र आमोन ने शासन किया।

Amon का अर्थ "प्रशिक्षण" है और वह उस समयावधि का प्रतिनिधित्व करता है जब "ज्ञान में वृद्धि" हुई, जो "ज्ञानी" को उस संदेश में प्रशिक्षित करती थी जिसकी मुहर खोली गई थी। Amon के बाद Josiah आया, जो सातों में एकमात्र राजा है जिसका भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास काफी अच्छा, हालांकि जटिल है।

योशियाह का अर्थ "परमेश्वर की नींव" है, और वह "अंत के समय" में मुहरें खुल जाने पर प्रकट हुई सच्चाइयों की स्थापना का प्रतिनिधित्व करता है। आमोन द्वारा दर्शाई गई ज्ञान-वृद्धि को विलियम मिलर ने, गैब्रियल और अन्य पवित्र स्वर्गदूतों के मार्गदर्शन में, समेकित किया। मिलर का कार्य "योशियाह" नाम से निरूपित है, क्योंकि उसी ने इस आंदोलन की नींव रखी। योशियाह के बारे में कहने के लिए और भी बहुत कुछ है, पर हम अब उसके पुत्र यहोआहाज़ की ओर बढ़ते हैं।

यहोआहाज़ जब राज्य करने लगा, तब वह तेईस वर्ष का था; और उसने यरूशलेम में तीन महीने राज्य किया। और उसकी माता का नाम हमूतल था, जो लिब्ना के यिर्मयाह की बेटी थी। और उसने यहोवा की दृष्टि में वही बुरा किया जो उसके पितरों ने किया था। और फ़िरौन नेखो ने हममात देश के रिब्ला में उसे बन्धनों में डाल दिया, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न करे; और देश पर सौ किव्कार चाँदी और एक किव्कार सोने का कर लगा दिया। और फ़िरौन नेखो ने योशियाह के पुत्र एलियाकिम को उसके पिता योशियाह के स्थान पर राजा बनाया, और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा, और यहोआहाज़ को ले गया; वह मिस्र गया और वहीं मर गया। 2 राजा 23:31-34.

Jehoahaz का अर्थ है 'यहोवा ने पकड़ लिया', और उसे Pharaohnecho ने बंदी बना लिया। Josiah का पुत्र Jehoahaz को Pharaohnecho ने बंदी बना लिया और उसके स्थान पर उसके भाई Eliakim को रखा, जिसका अर्थ है 'उत्थान का परमेश्वर'। तब Pharaohnecho ने Eliakim का नाम बदलकर Jehoiakim रखा, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर उठेगा'। नाम का परिवर्तन वाचा-संबंध का एक प्रतीक है, और प्रथम संदेश के सशक्त होने पर परमेश्वर एक प्रजा के साथ वाचा में प्रवेश करता है, और उसी समय वह पूर्व वाचा की प्रजा को छोड़ देता है।

11 अगस्त, 1840 को, उस्मानी साम्राज्य, जिसका प्रतिनिधित्व चार पवनों द्वारा किया गया था जिन्हें तीन सौ इक्यानबे वर्ष और पंद्रह दिनों के लिए मुक्त किया गया था, रोक दिया गया; या जैसा कि यहोआहाज़ का अर्थ है, वे "जकड़े गए"। उसी समय, एलियाकिम को राजा बनाया गया और उसका नाम बदलकर यहोयाकिम रखा गया, जिसका अर्थ है "परमेश्वर उठेगा"। यहोयाकिम के बाद उसके पुत्र यहोयाकीन आया, जिसके शास्त्रों में तीन नाम हैं।

यहोयाकीन नाम का अर्थ है "प्रभु स्थापित करेगा और स्थिर करेगा"। वह यहोयाकिम का पुत्र था, और 1844 के वसंत में दूसरे स्वर्गदूत के आगमन को वह चिह्नित करता है, क्योंकि परमेश्वर ने नया, सच्चा, प्रोटेस्टेंट सींग "स्थापित और स्थिर" किया। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश मध्यरात्रि की पुकार के संदेश द्वारा सशक्त किया गया था, और येकोन्याह तथा कोन्याह का अर्थ है "परमेश्वर स्थापित करेगा"। ये तीनों नाम, जिनका अर्थ समान है, मध्यरात्रि की पुकार का दूसरे स्वर्गदूत के संदेश से जुड़ जाने का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रबल पुकार के दौरान पवित्र आत्मा के अंतिम उड़ने जाने के समय ही एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाई जाती है। एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का प्रतिरूप मिलेराइट आंदोलन की मध्यरात्रि की पुकार में दर्शाया गया था, और यहोयाकीन, जिसे येकोन्याह और

कोन्याह भी कहा जाता है, मुहरबंदी का प्रतीक है।

जैसा कि मैं जीवित हूँ, प्रभु कहता है, चाहे यहूदा के राजा यहोयाकीम का पुत्र कोनियाह मेरे दाहिने हाथ की मुहर ही क्यों न होता, तब भी मैं तुझे वहाँ से उखाड़ फेंकता; और मैं तुझे उनके हाथ में सौंप दूँगा जो तेरी जान के पीछे पड़े हैं, और उनके हाथ में जिनसे तू डरता है—अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में, और कस्दियों के हाथ में। और मैं तुझे, और तेरी जननी को जिसने तुझे जन्म दिया, उस दूसरे देश में फेंक दूँगा, जहाँ तुम पैदा नहीं हुए; और वहीं तुम मरोगे। पर जिस देश में लौटने की इच्छा उन्हें है, वहाँ वे लौट न सकेंगे। क्या यह मनुष्य कोनियाह एक तुच्छ, टूटी हुई मूर्ति है? क्या वह ऐसा पात्र है जिसमें कोई प्रसन्नता नहीं? फिर वह और उसकी सन्तान क्यों निकालकर ऐसे देश में फेंके गए जिसे वे जानते नहीं? हे पृथ्वी, पृथ्वी, पृथ्वी, प्रभु का वचन सुन। यिर्मयाह 22:24-29.

Jehoiachin, Jeconiah और Coniah मुहरबंदी के उस समय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ मध्यरात्रि की पुकार का संदेश जुड़ता है। वह मूर्खों की मुहरबंदी के समय का प्रतिनिधित्व करता है। दुष्ट राजा उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो मूर्ख लाओदिकियाई कुँवारियाँ हैं, जो मुहरबंदी के समय पशु का चिन्ह पाने के लिए नियत हैं, क्योंकि वे सदा के लिए प्रभु के मुख से उगल दिए जाते हैं।

परमेश्वर के दाहिने हाथ की मुद्रिका उनकी मुहर है, और एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाए जाने के दौरान जो प्रभु के मुख से उगल दिए जाते हैं, उनकी तुलना जरुब्बाबेल से की गई है, उस व्यक्ति से जिसके हाथ में "सात बार" की सीसा-डोरी थी।

यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल से कह: 'मैं आकाश और पृथ्वी को हिला दूँगा; और मैं राज्यों के सिंहासनों को उलट दूँगा, और अन्यजातियों के राज्यों की शक्ति का नाश कर दूँगा; और मैं रथों को और जो उनमें सवार हैं उन्हें उलट दूँगा; और घोड़े और उनके सवार नीचे गिरेंगे—हर एक अपने भाई की तलवार से। उस दिन,' सेनाओं के प्रभु की यह वाणी है, 'मैं तुझे, हे जरुब्बाबेल, मेरे दास, शअल्लिएल के पुत्र, ले लूँगा,' प्रभु की यह वाणी है, 'और तुझे मुहर की अंगूठी के समान कर दूँगा, क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है,' सेनाओं के प्रभु की यह वाणी है। हाग्वै 2:21-23.

"ठोकर का पत्थर" जो "सात समय" है, वह "साहुल" है जो जरुब्बाबेल के हाथ में है, और उसे उस "मुहर" के रूप में दर्शाया गया है जिसका प्रयोग परमेश्वर एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाने के लिए करते हैं। "मुहर", या "चिन्ह", उन पर लगाई जाती है जो यरूशलेम में किए जाने वाले घृणित कामों के लिए "आहें भरते और रोते हैं"। आहें भरना और रोना, मुहर किए गए लोगों के अनुभव की पहचान कराता है; और चिन्ह लगाना तथा रोना, "सात समय" के उपाय के प्रति उनके आंतरिक प्रत्युत्तर का प्रतीक है। यह उनके पापों और उनके पितरों के पापों का अंगीकार है। यह इस बात की स्वीकृति है कि वे परमेश्वर के साथ नहीं चल रहे थे और परमेश्वर भी उनके साथ नहीं चल रहे थे 18 जुलाई, 2020 की निराशा के बाद से। यह वही परीक्षा है जो 1863 में असफल हुई थी, उस अवधि के दौरान जब फिलाडेल्फिया लाओदीकिया में परिवर्तित हो रही थी। यह उस काल का प्रतीक थी जब कोनिया द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए वे सदा के लिए मूर्ख लाओदीकियाई कुँवारियाँ ठहरते हैं, और जरुब्बाबेल द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए वे सदा के लिए बुद्धिमान फिलाडेल्फियाई कुँवारियाँ ठहरते हैं।

यहोइचिन के बाद जेदेकियाह आया, जो सात राजाओं में अंतिम था। जिस प्रकार मनश्शे 1798 और 'अंत का समय' का प्रतिनिधित्व करता था, उसी प्रकार जेदेकियाह 22 अक्टूबर, 1844 का प्रतिनिधित्व करना चाहिए, जब दर्शन 'बोलेगा, और झूठ नहीं बोलेगा'। जेदेकियाह दो इब्रानी शब्दों के संयोजन से बना एक नाम है। एक शब्द 'यहोवा' है, और इसे उस शब्द के साथ जोड़ा गया है जिसे दानियेल अध्याय आठ, पद चौदह में 'शुद्ध किया गया' के रूप में अनूदित किया गया है। जेदेकियाह का अर्थ परमेश्वर के मंदिर का शुद्धिकरण है, जो 22 अक्टूबर, 1844 को आरंभ हुआ।

यहूदा के अंतिम सात राजा 1798 से 22 अक्टूबर, 1844 तक के क्रमिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहोयाकिम 11 अगस्त, 1840 का प्रतीक है, जो बदले में 11 सितंबर, 2001 का प्रतिनिधित्व करता है। वह प्रथम स्वर्गदूत के संदेश के सशक्तिकरण का प्रतीक है, और उसका परिचय दानिय्येल अध्याय एक की पहली आयत में कराया गया है। अतः दानिय्येल अध्याय एक की पृष्ठभूमि और संदर्भ, जैसा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में दर्शाया गया है, प्रथम स्वर्गदूत के संदेश का सशक्तिकरण है। प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में मसीह अपने हाथ में एक छोटी पुस्तक लेकर उतरे, जिसे खाने की आज्ञा यूहन्ना को दी गई। इसी कारण दानिय्येल की पुस्तक में पहला परीक्षण खाने से संबंधित है।

हम इन विषयों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

और उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य-संतान, जो यह ग्रंथपत्र मैं तुझे देता हूँ, उसे अपने पेट में डाल, और अपनी अंतड़ियों को उससे भर। तब मैंने उसे खाया; और वह मेरे मुँह में मधु जैसा मीठा था। यहजकेल 3:3.